# संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या रिपोर्ट: प्रवृत्तियां, अनुमान और निहितार्थ

| यूपीएससी परीक्षा के किस पाठ्यक्रम से संबंधित | |
|---|---|
| **प्रारम्भिक परीक्षा** | **मुख्य परीक्षा** |
| **प्रथम प्रश्न पत्र :** राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्व की सामयिक घटनाएँ | **प्रथम और द्वितीय प्रश्न पत्र : जनसंख्या एवं संबद्ध मुद्दे और महत्वपूर्ण रिपोर्ट** |

## प्रसंग

- हाल ही में, संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या प्रखंड के आर्थिक और सामाजिक मामलों के विभाग के निर्देशन में प्रकाशित “विश्व जनसंख्या संभावना” (डब्ल्यूपीपी) के 2022 संस्करण में भारत के संदर्भ में अनुमान व्यक्त किया गया है कि वर्ष 2023 तक यह विश्व के सबसे अधिक आबादी वाले देश के रूप में चीन से आगे निकल जाएगा।
- साथ ही इस संस्करण में संभावना व्यक्त की गई है कि 15 नवंबर, 2022 तक विश्व की आबादी 8 अरब तक पहुंच जाएगी।

## विषयगत महत्वपूर्ण बिन्दु

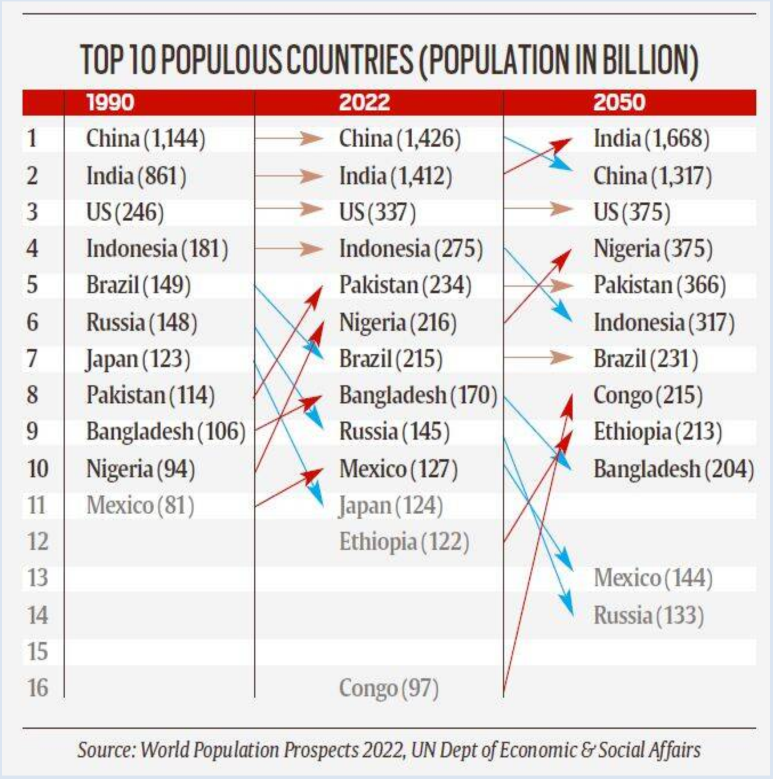
TOP 10 POPULOUS COUNTRIES (POPULATION IN BILLION)

| | 1990 | 2022 | 2050 |
|---|---|---|---|
| 1 | China (1,144) | China (1,426) | India (1,668) |
| 2 | India (861) | India (1,412) | China (1,317) |
| 3 | US (246) | US (337) | US (375) |
| 4 | Indonesia (181) | Indonesia (275) | Nigeria (375) |
| 5 | Brazil (149) | Pakistan (234) | Pakistan (366) |
| 6 | Russia (148) | Nigeria (216) | Indonesia (317) |
| 7 | Japan (123) | Brazil (215) | Brazil (231) |
| 8 | Pakistan (114) | Bangladesh (170) | Congo (215) |
| 9 | Bangladesh (106) | Russia (145) | Ethiopia (213) |
| 10 | Nigeria (94) | Mexico (127) | Bangladesh (204) |
| 11 | Mexico (81) | Japan (124) | |
| 12 | | Ethiopia (122) | |
| 13 | | | Mexico (144) |
| 14 | | | Russia (133) |
| 15 | | | |
| 16 | | Congo (97) | |

Source: World Population Prospects 2022, UN Dept of Economic & Social Affairs

### डब्ल्यूपीपी

- **प्रकाशन:** 1951
- **आधार:** द्विवार्षिक
- डब्ल्यूपीपी का प्रत्येक संशोधन 1950 से शुरू होने वाले जनसंख्या संकेतकों की एक ऐतिहासिक समय श्रृंखला प्रदान करता है।
- **अध्ययन:** प्रजनन, मृत्यु दर या अंतर्राष्ट्रीय प्रवास

- जनसंख्या बनाम विकास
    - o विश्व की जनसंख्या लगातार बढ़ रही है, किन्तु विकास की गति धीमी हो रही है।
    - o वैश्विक जनसंख्या 2030 में लगभग 8.5 बिलियन, 2050 में 9.7 बिलियन और 2100 में 10.4 बिलियन तक बढ़ने की संभावना व्यक्त की गई है।
    - o अध्ययन के अनुसार, वर्ष 2020 में 1950 के बाद से पहली बार वैश्विक विकास दर प्रति वर्ष 1% से कम रही।
- जनसंख्या वृद्धि में व्याप्त भिन्नता
    - o जनसंख्या वृद्धि की दर देशों और क्षेत्रों में काफी भिन्न होती है।
    - o 2050 तक वैश्विक जनसंख्या में अनुमानित वृद्धि का आधे से अधिक केवल आठ देशों में केन्द्रित होगा-
        1. कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य
        2. मिस्र
        3. इथियोपिया
        4. भारत
        5. नाइजीरिया
        6. पाकिस्तान
        7. फिलीपींस
        8. संयुक्त गणराज्य तंजानिया
    - o विश्व के सबसे बड़े देशों में असमान विकास दर आकार के आधार पर उनकी रैंकिंग को फिर से व्यवस्थित करेगी।
    - o 46 सबसे कम विकसित देश (एलडीसी) विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते देशों में से हैं।
    - o संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) की उपलब्धि के लिए चुनौतियों का सामना करते हुए वर्ष 2022 से 2050 के मध्य कई देशों की जनसंख्या के दोगुनी होने का अनुमान व्यक्त किया गया है।

- विश्व जनसंख्या में वृद्धों के अनुपात को लेकर अनुमान
  - रिपोर्ट में उल्लिखित है कि 65 और उससे अधिक आयु की वैश्विक आबादी का हिस्सा 2022 में 10 प्रतिशत से बढ़कर 2050 में 16 प्रतिशत होने का अनुमान है।
  - संस्करण में आयु बढ़ने वाली आबादी वाले देशों को सामाजिक सुरक्षा और पेंशन प्रणाली की स्थिरता में सुधार और सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल और दीर्घकालिक देखभाल प्रणालियों की स्थापना सहित वृद्ध व्यक्तियों के बढ़ते अनुपात में सार्वजनिक कार्यक्रमों को अनुकूलित करने के लिए कदम उठाने चाहिए।
- प्रजनन क्षमता में गिरावट की प्रवृत्ति
  - रिपोर्ट में उल्लिखित है कि हाल के दशकों में कई देशों में प्रजनन क्षमता में उल्लेखनीय रूप से गिरावट दृष्टिगोचर हुई है।
  - प्रजनन क्षमता में निरंतर गिरावट ने कामकाजी उम्र (25 और 64 वर्ष के बीच) में जनसंख्या की बढ़ती प्रवृत्ति को जन्म दिया है, जिससे प्रति व्यक्ति त्वरित आर्थिक विकास का अवसर पैदा हुआ है।
  - आयु वितरण में यह बदलाव समयबद्ध अवसर प्रदान करता है।
  - त्वरित आर्थिक विकास जिसे "जनसांख्यिकीय लाभांश" के रूप में जाना जाता है, एक अनुकूल आयु वितरण के संभावित लाभों को अधिकतम करने के लिए, देशों को सभी उम्र में स्वास्थ्य देखभाल और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करके और उत्पादक रोजगार और काम के अवसरों को बढ़ावा देकर अपनी मानव पूंजी के आगे के विकास में निवेश करने की आवश्यकता है।
  - यह देखते हुए कि वैश्विक आबादी का दो-तिहाई हिस्सा आज ऐसे देश या क्षेत्र में रहता है जहां जीवन भर की प्रजनन क्षमता प्रति महिला 2.1 जन्म से कम है।
  - इसमें कहा गया है कि प्रजनन क्षमता के निरंतर निम्न स्तर और कुछ मामलों में उत्प्रवास की उच्च दर के कारण 2022 और 2050 के बीच 61 देशों या क्षेत्रों की जनसंख्या में 1 प्रतिशत या उससे अधिक की कमी होने की संभावना है।
- औसत वैश्विक आयु
  - मृत्युदर में और कमी के साथ 2050 में औसत वैश्विक लंबी उम्र लगभग 77.2 वर्ष होने का अनुमान है।

- o ध्यातव्य है कि वैश्विक जीवन प्रत्याशा 2019 में 72.8 वर्ष देखी गई। इसमें 1990 के बाद से लगभग नौ वर्षों में सुधार हुआ।
- o यद्यपि, कोविड-19 महामारी के कारण 2021 में वैश्विक जीवन प्रत्याशा घटकर 71 वर्ष हो गई थी और सबसे कम विकसित देशों में जीवन प्रत्याशा वैश्विक औसत से सात साल पीछे रह गई।
- o वर्ष 1990 से विश्वभर में जनसंख्या वृद्धि से संबंधित मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए 11 जुलाई को 'विश्व जनसंख्या दिवस' आयोजित किया जाता रहा है।

- अंतर्राष्ट्रीय प्रवास
  - o कुछ देशों के लिए जनसंख्या प्रवृत्तियों पर अंतर्राष्ट्रीय प्रवास का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ रहा है।
  - o वर्ष 2000 और 2020 के बीच उच्च आय वाले देशों के लिए, जनसंख्या वृद्धि में अंतर्राष्ट्रीय प्रवास का योगदान (80.5 मिलियन का शुद्ध प्रवाह) मृत्यु पर जन्म के संतुलन (66.2 मिलियन) से अधिक हो गया।

| **अनुमानित शुद्ध बहिर्वाह (2010-2021)** | | |
|---|---|---|
| **1.** | पाकिस्तान | 16.5 मिलियन |
| **2.** | भारत | 3.5 मिलियन |
| **3.** | बांग्लादेश | 2.9 मिलियन |
| **4.** | नेपाल | 1.6 मिलियन |
| **5.** | श्रीलंका | 1.0 मिलियन |

  - o अगले कुछ दशकों में, उच्च आय वाले देशों में प्रवासन जनसंख्या वृद्धि का एकमात्र चालक होगा।
  - o 10 देशों के लिए, प्रवासियों का अनुमानित शुद्ध बहिर्वाह 2010 से 2021 की अवधि में 1 मिलियन से अधिक हो गया। इनमें से कई देशों में, बहिर्वाह अस्थायी श्रम आंदोलनों के कारण हुआ।
  - o उदाहरणार्थ- पाकिस्तान (16.5 मिलियन का शुद्ध प्रवाह), भारत (3.5 मिलियन), बांग्लादेश (2.9 मिलियन), नेपाल (1.6 मिलियन) और श्रीलंका (1.0 मिलियन)।

**संयुक्त राष्ट्र के डब्ल्यूपीपी की विश्वसनियता और भारत की जनगणना के साथ तुलनात्मक अध्ययन**

- संयुक्त राष्ट्र के डब्ल्यूपीपी का एक लंबा इतिहास रहा है और कई देश इन अनुमानों का उपयोग करते हैं।

- यह एक प्रामाणिक स्रोत है और इसकी विश्वसनीयता के बारे में कोई संदेह नहीं है।
- भारत में, महापंजीयक जनगणना के आधार पर जनसंख्या प्रक्षेपण के साथ सामने आता है। अंतिम बार ऐसा प्रक्षेपण 2019 में जारी किया गया था, जो 2011 की जनगणना पर आधारित था।

**भारत में जनगणना**

- जनगणना केवल व्यक्तियों की गणना मात्र नहीं है, अपितु यह कई प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आंकड़े उपलब्ध कराने का सबसे बड़ा स्रोत है।
- जनगणना का महत्त्व प्राचीन काल से लेकर अब तक है।
- आधुनिक भारत के इतिहास में पहली जनगणना वर्ष 1872 में गवर्नर-जनरल 'लॉर्ड मेयो' के शासनकाल के दौरान आयोजित की गई थी।
- यद्यपि, प्रथम समकालीन जनगणना की शुरुआत 1881 में मानी गई।
- वहीं स्वतंत्र भारत में वर्ष 1951 में पहली जनगणना हुई।

**16वीं जनगणना**

- हाल ही में, मूल रूप से 2021 में होने वाली जनगणना प्रक्रिया को आगे बढ़ाते हुए इसे वर्ष 2023-24 में कर दिया गया है।
- भारत के रजिस्ट्रार जनरल (आरजीआई) के कार्यालय ने प्रशासनिक सीमाओं को फ्रीज करने की समय सीमा 31 दिसंबर, 2022 तक बढ़ा दी है।

**भारतीय संविधान में जनगणना से संबद्ध प्रावधान**

- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 246 के अंतर्गत जनसंख्या जनगणना संघ सूची का विषय है।
- विदित है कि इसे संविधान की सातवीं अनुसूची की प्रविष्टि 69 के रूप में सूचीबद्ध किया गया है।

**जनगणना अधिनियम 1948**

- देश में जनगणना का आयोजन जनगणना अधिनियम, 1948 के प्रावधानों के अंतर्गत किया जाता है।

- विदित है कि इस अधिनियम के तहत, जनगणना के दौरान एकत्र की गई जानकारी को गोपनीय माना जाता है और यह जानकारी कानून की अदालतों के लिए भी उपलब्ध नहीं होती है।
- इस कानून में, अधिनियम के किसी भी प्रावधान का पालन न करने या उल्लंघन करने के लिए सार्वजनिक और जनगणना अधिकारियों दोनों के लिए दंड का प्रावधान किया गया है।

**स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस**